

वक्फ बिल ने देश की सियासत में जोड़ दिया नया अध्याय

■ पीएम मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने एक साथ साध लिये छह निशाने

■ बदल गयी राजनीति की दिशा, भाजपा को मुस्लिम वोट बैंक का डर नहीं

कीवी 25 घंटे, लोकसभा में 12 और राज्यसभा में 13 घंटे की चर्चा के बाद बहुचर्चित वक्फ संशोधन विधेयक संसद से पारित हो गया। इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अब तक के कार्यकाल का सबसे महत्वपूर्ण विधायी काम तो माना ही जा रहा है, साथ ही इस विधेयक ने देश की राजनीति की दिशा को भी बदल कर रख दिया है। अब भारतीय राजनीति में अधोषित तौर से तीन खेम बन गये हैं। पहला खेम भाजपा जैसी राष्ट्रवादी पार्टियों का है, जबकि दूसरा कांग्रेस, वाम दल, राजद, डीएमके, मुस्लिम लीग, एआईएमआईएम, बीआरएस और टीएमसी का है, जिनके लिए भाजपा अब भी साप्रदायिक पार्टी है, जबकि ये खुद को सेक्युलर

मानती हैं। तीसरे खेम में ऐसी राजनीतिक पार्टियां हैं, जो पहले भाजपा को साप्रदायिक मानती थीं, लेकिन अब उसके नीतिगत फैसलों के साथ हैं। ये

पार्टियां अब मुसलमानों को कठित रूप से आहत होने वाले विषयों पर मोदी सरकार को खुलकर समर्थन देती हैं। वास्तव में इस बिल को पास करने के साथ ही भाजपा ने एक कदम से छह निशाने साथ लिये हैं। दरअसल, धर्मनिरपेक्षता का चश्मा लंबे वक्त से

भाजपा और भाजपा सरकार के फैसलों के खिलाफ पहन कर विपक्ष खुद को सेक्युलरिज्म का सियासी चैपियन दिखाता रहा, लेकिन लोकसभा में वक्फ

अब नहीं चलती। तीसरा, मुस्लिमों को खतरा बताकर वोट की सियासी हाँड़ी हर बार नहीं ढंगने वाली है। चौथा, मुस्लिमों से जुड़े प्रदर्शन के बहाने फैसले बदलवाने की मंशा अब कमयाब नहीं होती। पांचवा, नीतीश और नायदू के समर्थन के दम पर चलती सरकार को कमज़ोर समझना विषय के भूलना होगा। और छठा, विपक्ष को ये बात भी समझनी होगी कि भले इस बार सीढ़ी उनकी बढ़ी है, लेकिन पीएम मोदी के हाथ से फैसलों की ताकत ढीली नहीं पड़ी है। क्या है वक्फ बिल का सियासी असर और मोदी-शाह की जोड़ी ने केसे हर परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाया, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

क्या वक्फ बिल पर मुहर के साथ अब देश में सियासत की नयी सेक्युलरिज्म देखी जायेगी?

फैसला लेने में पीएम मोदी का कोई सानी नहीं

विपक्ष को ये लगता रहा होगा कि बिहार में नीतीश कुमार और ओंधा प्रदेश में चंद्रबाबू नायदू के सांसदों के भरोसे चलती सरकार वक्फ पर फैसला लेने में हिक्काचार्यों, लेकिन 240 सीटों के साथ भी संसद में भाजपा वैसी ही दिखी, जैसी 303 सीटों के साथ थी। 2019 में जब मोदी सरकार दूसरी बार सत्ता में आयी, तो छह महीने के भीतर सरकार ने तीन तलाक, धारा 370 और सीएए कानून तीनों को पास करा दिया। तब भाजपा के पास अपने दम पर 303 सीटों का बहुमत था। अबकी बार जब 2024 में सरकार बनी तो भाजपा की खुद की सीटों 240 ही आयीं, लेकिन कुछ ही महीने में वक्फ संशोधन बिल को पेश करके उस पर आखिरकार अब मुहर लगा ली। बिल पर मुहर सबूत है कि बहुमत भले सरकार के पास अपने दम पर ना हो, लेकिन सर्वत में फैसला लेने में पीएम मोदी का कोई सानी नहीं।

क्या चुनावी राजनीति में इसका असर दिखेगा

वक्फ बिल का असर क्या आये चुनावी राजनीति में दिखेगा? ये सवाल इसलिए, क्योंकि आगे बिहार का चुनाव है, फिर पश्चिम बंगाल का चुनाव एक साल से कम वक्त में है। इस चुनावी सियासत को गुह मंत्री अच्छे से खारिज करके सच बताया। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायदू को विपक्ष और मुस्लिम संगठनों ने बिल पर सदन में सवाल उठाया, विरोध किया, तो अमित शाह का जवाब चर्चा में आया।

विपक्ष के आरोपों को सरकार ने किया खारिज

सवाल ये है कि जहां विपक्ष के नेता कहते रहे कि सङ्केत पर उत्तरकर विरोध करा दें। क्या उनकी इस राजनीति में खुद मुस्लिमों ने साथ नहीं दिया है। क्या इसके बजाए ये है कि जिसका विपक्ष को लगा होगा कि इसका पार्टियों ने बजाए ये है कि जहां विपक्ष



कहता रहा कि वक्फ बोर्ड में गैर मुस्लिम बहुसंख्यक हो जायेंगे, सरकार मुसलमानों की नीतीश कुमार को मुस्लिम वोट के नाम पर भाजपा के खिलाफ जगाने में अंत तक जुटे रहे, लेकिन सबका सपना टूट गया। नीतीश की पार्टी ने बता दिया कि मुस्लिम वोट की सियासत का गणित बदल चुका है। दिल्ली, बिहार की राजधानी पटना पर और क्या-क्या बाद नहीं कराया, लेकिन क्या-क्या बाद नहीं कराया विवाह। इसी से आप समझ लीजिए कि बारी-आयी, तो जब्तु और टीटीपी दोनों ने विरोधियों के सपनों पर पानी फेर दिया।

मुस्लिम वोट की सियासत का गणित बदला

नीतीश कुमार के पलटने का इन्हिंस देखकर इस बार विपक्ष को लगा गये, ताकि ये बिल का विरोध कर दें, लेकिन मोदी-शाह

बिल पर भाजपा ने वो बैटिंग की है, जिससे राजनीति के मैदान में फिलहाल यह साफ हो गया कि सेक्युलरिज्म की वो परिभाषा नहीं चलती, जो विपक्ष चाहता रहा। दूसरा यह कि मुस्लिमों से जुड़े हर फैसले को मुस्लिम विरोध के कठबैर में खड़ा करने की राजनीति

भाजपा के लिए क्यों नरम पड़े पुराने सेक्युलर

2019 में भाजपा की दूसरी पूर्ण बहुमत सरकार बनने के बाद सीएए और धारा-370 पर बड़ा फैसला हो गया। वैचारिक तौर से भाजपा के साथ रही शिवसेना ने इन फैसलों का समर्थन किया। जदयू और बीजेपी ने बिना शोर मचाये संसद में इन बिलों का समर्थन किया। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट के अदेश ने राम मंदिर बनाने का रास्ता साफ कर दिया। इसके साथ ही राम मंदिर और धारा 370 जैसे विषय विवादित राजनीतिक मुद्दों की विस्तर से बाहर हो गये। भाजपा ने चुनावों में खुलते रहे इन मुद्दों पर अपनी पीठ थपथपायी। नरेंद्र मोदी सरकार और अमित शाह बोल्ड फैसले के नायक बन गये। एनडीए समर्थक राजनीतिक दलों ने भी भाजपा को इसका क्रिडिट देकर अपनी मुस्लिम समर्थक छाया बरकरार रखी।

चुनावी जीत ने नये सेक्युलर दलों को निर्द बनाया

सबसे बड़ा फैसला के बाद आया कि 370 और सीएए के समर्थन देने के बाद एनडीए की पार्टी ने निर्द बनाया जाएगा। जब आरामदार इन मुद्दों की विस्तर से बाहर हो गये। भाजपा ने चुनावों में खुलते रहे इन मुद्दों पर अपनी पीठ थपथपायी। नरेंद्र मोदी सरकार और अमित शाह बोल्ड फैसले के नायक बन गये। एनडीए समर्थक राजनीतिक दलों ने भी भाजपा को इसका क्रिडिट देकर अपनी मुस्लिम समर्थक छाया बरकरार रखी।

देवगौड़ा की तारीफ, प्रफुल्ल पटेल के माध्यम

राज्यसभा में आलम यह था कि जनता दल (सेक्युलर) के नेता और पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवगौड़ा ने वक्फ संपत्तियों की रक्षा के लिए पीएम मोदी की नीतियों का समर्थन किया।

विपक्षी होने के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने कहा कि विपक्ष की नहीं चली, बल्कि नीतीश कुमार को मुस्लिम वोट के नाम पर भाजपा के खिलाफ जगाने में अंत तक जुटे रहे, लेकिन सबका सपना टूट गया। नीतीश की पार्टी ने बता दिया कि मुस्लिम वोट की सियासत का गणित बदल चुका है। दिल्ली, बिहार की राजधानी पटना पर और क्या-क्या बाद नहीं कराया, लेकिन क्या-क्या बाद नहीं कराया विवाह। इसी से आप समझ लीजिए कि बारी-आयी, तो जब्तु और टीटीपी दोनों ने विरोधियों के सपनों पर पानी फेर दिया।

लालू विरोध और बिहार की राजनीतिक मजबूरी के कारण एनडीए का हिस्सा बना। 1998 और 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी ने गठबंधन की सरकार बनायी, लेकिन उन्हें तेलुगुदेशम, डीएमके, एआइएडीएमके जैसे दलों का बारी-बारी समर्थन भी शर्तों के साथ मिला। शर्त यह थी कि आपको मोदी का चेहरा परस्त नहीं है, तो मारे देखियो। पूर्व पीएम देवगौड़ा और प्रफुल्ल पटेल के दोनों ने बहुमत देने के बाले मुद्दों से पहरेज करे। जिन्होंने वक्फ बिल के पक्ष में भाजपा की नीतियों का समर्थन किया।

90 के दशक में कई दलों के लिए अछूत थी भाजपा

90 के दशक में भाजपा के लिए अछूत थी भाजपा

शिवसेना, अकाली दल और जदयू के लिए अलग अलग दलों में लिए गए थे। इन दलों के बारे में आपको यह जानना चाहिए कि विपक्षी होने के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने तेलुगुदेशम, डीएमके, एआइएडीएमके जैसे दलों का बारी-बारी समर्थन भी शर्तों के साथ मिला। शर्त यह थी कि आपका मुस्लिमों को आहत करने के बाद चलते रहे। इन दलों के बारे में आपको यह जानना चाहिए कि विपक्षी होने के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने तेलुगुदेशम, डीएमके, एआइएडीएमके जैसे दलों का

एसीबी के हत्थे बढ़ा नामकुम का घूसखोर सब-इंस्पेक्टर 30 हजार रुपये घूस लेते गिरफ्तार

आजाद सिपाही संचाददाता



गिरफ्तार किया गया है।

एसीबी ने नामकुम थाने के दरोगा को गिरफ्तार किया है। एसीबी ने नामकुम थाने के दरोगा चंद्रीप्रसाद को रिश्वत लेते रहे हाथों गिरफ्तार किया गया है। एक केस को मैनेज करने के नाम पर दरोगा 30 हजार रुपये रिश्वत लेते रहे हाथ पकड़ा गया है। राजधानी रांची में दुसरा दरोगा है जो घूस लेते गिरफ्तार हुआ है। इससे पहले कोतवाली थाने के एक सब इंस्पेक्टर को 5 हजार रिश्वत लेते हुए रहे हाथ गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। ताजा मामला नामकुम थाने का है। एसीबी ने नामकुम थाने के दरोगा चंद्रीप्रसाद को एक केस को मैनेज की थी कि उनकी एक लड़की के साथ सार्वाई हुई थी, लेकिन किसी

कारणशंसक सार्वाई दूट गयी। इस दौरान पंचों के माध्यम से सभी सामान का आदान-प्रदान हो गया था। पूर्व में मामले को लेकर नामकुम थाने में लड़की के परिजनों के द्वारा भी नामकुम थाने में कांड संख्या 262/24 दर्ज करवाया गया।

वक्फ संशोधन विधेयक से न्याय और पारदर्शिता का मार्ग प्रशस्त : बाबूलाल

आजाद सिपाही संचाददाता

बेरोजगारी की स्थिति गंभीर, राज्य सरकार उदासीन : बाबूलाल मरांडी

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष



और नेता प्रतिपक्ष चाबूलाल मरांडी ने कहा कि संसद द्वारा परिवर्तन वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025 वर्षों से चले आ रहे अन्याय और भ्रष्टाचार पर विराम लगाने वाला कदम है। उन्होंने कहा कि वह विधेयक न्याय और समाजता के एक नये युग का द्वारा खोला है।

मरांडी ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि इस ऐतिहासिक संशोधन से वक्फ बोर्ड और वक्फ संपत्तियां पहले से कहीं अधिक पारदर्शी, जवाहरेंद्र और न्यायसंगत बनेंगी। उन्होंने विधेयक के लिए प्रधानमंत्री और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री एवं इकाई समर्थन करने वाले सभी दलों एवं संसदों का हार्दिक आभार जताया है।

सरना झड़े का अपमान बर्दशत नहीं किया

जायेगा : मरांडी

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष चाबूलाल मरांडी ने

उन्होंने कहा है कि आदिवासी के द्वारा दूसरे समुदाय की ओर से आदिवासी समुदाय पर हमले की निंदा की है। उन्होंने कहा है कि आदिवासी भाइयों-बहनों पर जानलेवा हमला, जातिसूचक टिप्पणी और परिव्रत्र सरना झड़े का अपमान बर्दशत नहीं किया जायेगा।

उन्होंने कहा है कि आदिवासी

समाज ने सदियों तक मुलांगों

और आदिवासी आक्रितियों से संघर्ष कर रखा है। लेकिन राज्य सरकार की नाकामियों के कारण अब फिर से मुलांगों की मानसिकता वाले उपद्रवी हमारी संरक्षित पर

कुठाराधार कर रहे हैं।

सरना राय ने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री के

कार्यकाल में कई ऐसे फर्जी

अस्पताल हैं जो रजिस्टर्ड हो गये

हैं। जबकि कई ऐसे अस्पताल हैं

जिनके द्वारा आयुष्मान लाभ के

लिए फर्जी बाबा बनाया गया।

उन्होंने बताया कि सरकार का

मंत्रालय और सचिवालय इसमें

शामिल हैं। जांच पूरी होने के बाद

प्रदान की जाये और सर्वोच्च

सचिवालय इसमें आयुष्मान

दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

सरना राय ने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा कि ज्ञारखंड

में आयुष्मान का अभी भी 40

करोड़ का बिल बकाया है।

उन्होंने कहा क

